भारतीय जनता पार्टी

राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक

20–21 जून, 2009

संसदीय सौध, नई दिल्ली

अध्यक्षीय भाषण

प्रिय बन्धुओ,

दिल्ली में हो रही राष्ट्रीय कार्यकारिणी की इस बैठक में आप सभी का स्वागत है। इसके पूर्व हम नागपुर में मिले थे। हमने अपनी राजनैतिक शक्ति के साथ पन्द्रहवीं लोकसभा चुनाव की लड़ाई लड़ी। मैं पार्टी के प्रत्येक कार्यकर्ताओं को, और करोड़ों समर्थकों और मतदाताओं के प्रति अपनी ओर से आभार व्यक्त करता हूं, जिन्होंने पिछले लोकसभा चुनाव में हमारा समर्थन किया। हमें अपेक्षित सफलता नहीं मिली। जनता ने हमें पुनः विपक्ष में बैठने का जनादेश दिया। जनादेश शिरोधार्य कर, हम पुनः अपने काम में लग गए हैं। चुनाव परिणाम से हम सभी चकित जरूर हुए, पर विचलित कतई नहीं। परिणाम ऐसे क्यों आए? यह निश्चित ही हमारे लिए आत्मचिंतन और विश्लेषण का गंभीर विषय है। हम हर स्तर पर आत्मचिंतन भी करेंगे और विश्लेषण भी। चिंतन और मंथन से जो निष्कर्ष निकलेगा, उसे पाथेय मानकर हम पुनः अपने पथ की ओर सभी को साथ लेकर अनथक पथिक की तरह आगे कूच करेंगे। रूकना, थकना हमारा काम नहीं है। मुझे पूरा विश्वास है कि अंतिम विजय हमारी होगी। विजय की कामना को सार्थक और सबल बनाने के लिए सत्त साधना और निष्काम कर्म की भावना का होना अनिवार्य है। मुझे लगता है कि हमारी साधना और भावना में कहीं न कहीं कोई कमी रह गई। हमें समय रहते उन कमियों को आवश्यक रूप से दूर करना होगा।

लोकसभा चुनावों के परिणाम

मित्रों, लोकसभा चुनाव के परिणाम हमारी आशाओं के अनुरूप नहीं रहे। इसे हम स्वीकार करते हैं। परन्तु एक व्यापक प्रचार इस बात का हो रहा है कि भाजपा की देशव्यापी पराजय हुई है। मैं इसे स्वीकार नहीं करता। क्योंकि **यदि हम देश के भिन्न–भिन्न क्षेत्रों को देखें तो हमारे चुनाव परिणाम राज्यवार मिश्रित स्वरूप के रहे।** कहीं हमने शानदार प्रदर्शन बरकरार रखा तो कहीं हम पिछली स्थिति से काफी बेहतर हुए, कहीं हम यथावत रहे तो कुछ राज्यों में हमारा प्रदर्शन निराशाजनक भी रहा।

फिर भी यह एक यथार्थ है कि कुल मिलाकर पिछली लोकसभा से हमारी सीटें 22 कम हुईं।

हम सभी जानते है कि देशभर में पिछले पांच वर्षों में संपन्न राज्यों के विधानसभा चुनावों में हम सर्वाधिक राज्यों में विजयी रहे। हमने झारखंड, बिहार के साथ–साथ पंजाब, हिमाचल एवं उत्तराखंड में कांग्रेस को पराजित किया। गुजरात में हमने पुनः सत्ता प्राप्त की। इतना ही नही, दक्षिण भारत के कर्नाटक में सरकार बनाकर भाजपा ने दक्षिण में अपना परचम फहराया। भाजपा के राजनैतिक यात्रा का वह ऐतिहासक दिन था।

हम उत्तर प्रदेश, राजस्थान और दिल्ली में अवश्य असफल रहे। पर गुजरात, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में हमारी पुनः सरकार बनी। भाजपा की बढ़ती शक्ति और यूपीए की अलोकप्रियता के कारण वातावरण हमारे पक्ष में बनता दिख रहा था। इस बात से भी कोई इंकार नहीं कर सकता कि परिणाम आने के एक दिन पूर्व तक कांग्रेस का नेतृत्व घटक दलों के सहयोग की तलाश में पूरी तरह जुटे थे। कांग्रेस के लोगों को भी इतनी सीटों का अंदाज नहीं था। बहरहाल राजनैतिक परिस्थितियां उनके पक्ष में बनी और कांग्रेस दो सौ से अधिक सीटें प्राप्त करने में सफल रहीं।

चुनाव परिणामों के अन्तर्निहित संदेश

वर्तमान लोकसभा के चुनाव परिणामों को यदि हम अपनी लाभ हानि से अलग हटकर व्यापक राष्ट्रीय दृष्टि से देखें तो इसमे कुछ अंतर्निहित सकारात्मक संदेश भी हैं। वह संदेश यह है कि विशुद्ध अवसरवादी राजनीति करते हुए सरकारों पर दबाव बनाकर अपना राजनैतिक दबदबा सिद्ध करने की एक परम्परा को झटका

लगा। पिछले 15–20 वर्षों में जो सिद्धांतहीन स्वार्थों पर आधारित राजनीति लगातार पनप नही थी ऐसे सभी दल इस बार के चुनाव में खासे नुकसान में रहे।

जातिवादी राजनीति करने वाले राजनैतिक दलों के स्वप्न जहां भंग हुए वहीं अनेक प्रमुख प्रत्याशी जिनकी छवि बाहुबली की थी वे भी बुरी तरह से हारे। अतः इस आधार पर 15वीं लोकसभा चुनाव के परिणाम लोकतंत्र के कम से कम इस दिशा में अधिक परिपक्व होने के संकेत देते है।

इन चुनाव ने नितांत अवसरवादी और स्वेच्छाचारी सिद्धान्तों की राजनीति को लगभग धराशायी कर दिया। वैसे तो पश्चिम बंगाल में और केरल में वामपंथियों को जनता ने सबक सिखाया ही, साथ ही उनकी राजनैतिक ब्लैकमेलिंग करने पर भी प्रतिबन्ध लगाया।

इस लोकसभा में कांग्रेस सबसे बड़ी पार्टी बनी है और भाजपा दूसरे सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरकर आयी है। तीसरे स्थान पर जो दल हैं जैसे कम्युनिस्ट, सपा, बसपा और द्रमुक, उनकी संख्या हमारी 1/5 से भी कम (लगभग 20 के आस पास) है अर्थात् दूसरे और तीसरे नम्बर के दलो के मध्य यह भारी अन्तर इस बात का भी संकेत देता है कि **देश की जनता का विश्वास अब दो ध्रुवीय राजनीति में बढ़ रहा है। इसलिए हम यहां दावे के साथ कह सकते है कि आगामी वर्षों में यदि हमने ठीक से अपने संगठन का विस्तार किया और जनसमर्थन बढ़ाने के कारगर कदम उठा लिए तो आने वाला कल हमारा होगा।**

अनेक राजनैतिक दलों ने जहां जाति, पंथ और मजहब का सहारा लेकर वोट की राजनीति करने में कोई संकोच नहीं किया वहीं **हमने वोट से ज्यादा अहमियत् 'राष्ट्र' को दिया। मेरी ही नहीं आप सभी की मान्यता होगी कि हमारे सामने वोट से बड़ा राष्ट्र है और हमें इस बात का सुकून है कि हमने जिन बातों का विरोध किया वह हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य था।** हम अपराध बोध से ग्रस्त नहीं है। कोई भी राष्ट्रवादी मजहब के आधार पर आरक्षण का समर्थन कैसे कर सकता है? साम्प्रदायिकता के आधार पर बजट में वित्तीय प्रावधान करने के फैसले को न्यायोचित कैसे ठहराया जा सकता ? गरीबी और पिछड़ेपन को कभी मजहबी नजरियें से नहीं देखा जा सकता बल्कि इसे सदैव मानवीय आधार पर देखा जाना चाहिए। सच्चर कमेटी की सिफारिशें हों अथवा सेना में मुसलमानों की संख्या गिनवाना यह सब सरासर राष्ट्र के पंथनिरपेक्ष ढांचे पर आघात करने वाला है। मेरा आज भी यह मानना है कि हम अपनी जगह पर संवैधानिक और नैतिक दोनों तरह से सही थे। **देर–सबेर देश भी इस बात को स्वीकार करेगा कि सामाजिक न्याय की तरह राष्ट्रीय न्याय या नैशनल जस्टिस भी एक सिद्धांत है जहां राजनीति राष्ट्रीय हितों के परे नहीं जानी चाहिए।** मैं यह मानता हूं कि भारतीय जनता पार्टी का पक्ष राष्ट्रीय न्याय पर आधारित था जिसे आने वाले समय में हम और प्रभावी ढंग से जनता के समक्ष रखेंगे और उसका समर्थन प्राप्त करेंगें।

<u>राष्ट्रवादी नीतियों पर आग्रह</u>

हमनें इस बार के चुनाव घोषणा पत्र में श्रीराम जन्मभूमि पर भव्य मंदिर निर्माण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता, धारा 370 समाप्त करने के प्रति अपना स्पष्ट मत और समान नागरिक संहिता लागू करने के प्रति अपना आग्रह व्यक्त किया था। हम आज भी इन मुद्दों पर कायम हैं क्योंकि हमारा यह मानना है कि ये मुद्दे राष्ट्र की अखण्डता और एकता के मूल बिन्दु से जुड़े हुए हैं।

ऐसे सारे विषय राष्ट्रहित में थे। आवश्यकता है आनेवाले वर्षों में उन्हें और अधिक प्रभावी ढंग से जनता को समझाने की।

<u>एक प्रभावी विपक्ष की भूमिका</u>

हम पर जनता ने जो जिम्मेदारी सौंपी हे, वह सामान्य नहीं है। मैं यहां स्पष्ट कर दूं कि अब कांग्रेस अपने दायित्व से हट नहीं सकती। वह अपने घटक दलों का बहाना नहीं ले सकती है। हम भारत के दीन–दुखियों की, किसानों की, मजदूरों की, आम आदमी के हक की लड़ाई को जारी रखेंगे।

हम यहां यह भी स्पष्ट करना चाहते है कि जहां राष्ट्रहित और आम नागरिकों की भलाई से जुड़े मुद्दे होंगे वहां हम सरकार को पूरा समर्थन देंगे। लेकिन इसके लिए सरकार को भी आगे आना होगा। यह सरकार की जिम्मेदारी होगी कि वह दिखाए कि महत्वपूर्ण मुद्दों पर आम सहमति बनाने की उस परम्परा को वह आगे बढ़ा रही है, जिसकी लोकतंत्र में अपेक्षा रहती है।

'हिन्दुत्व/भारतीयता/सांस्कृतिक राष्ट्रवाद'

मित्रों,

इस लोकसभा चुनाव परिणाम के बाद कुछ लोगों ने हमें यह सलाह देना शुरू कर दी है और अनेक समाचार पत्रों में यह प्रचारित किया जा रहा है कि, कि भाजपा को अब 'हिन्दुत्व' का मुद्दा छोड़ देना चाहिए। क्योंकि भाजपा लगातार दूसरी बार चुनाव नहीं जीत सकी।

पहली बात 'हिन्दुत्व' कभी राजनैतिक मुद्दा रहा ही नहीं और भाजपा ने इसे कभी मुद्दा बनाया ही नहीं कि अब भाजपा को हिन्दुत्व छोड़ देना चाहिए। प्रचारित किया जा रहा है कि भाजपा की पराजय भारत की राजनीति में हिन्दुत्व की विचारधारा को देश की जनता द्वारा नकारे जाने का प्रतीक है। मैं पूछना चाहता हूं कि क्या यह चुनाव हिन्दुत्व के मुद्दे पर जनमत संग्रह के लिए हुआ था? यदि नहीं तो चुनाव के प्रतिकूल परिणाम हमारी विचारधारा के नकारे जाने के प्रतीक कैसे हो सकते हैं। यदि हम या हमारी विचारधारा नकार दी गयी होती तो हम आज देश के प्रमुख प्रतिपक्षी दल कैसे बन जाते।

जब कभी कोई भाजपा से सवाल करता है कि आपका 'हिन्दुत्व' के बारे में क्या कहना है तो मेरा यह कहना है कि 'हिन्दुत्व' हमारी ही नहीं सृष्टि की जीवन शैली हैं। **सर्वोच्च न्यायालय ने भी 1995 में अपने प्रसिद्ध निर्णय में भी यहीं कहा है कि हिन्दुत्व कोई मत या सम्प्रदाय नहीं बल्कि एक जीवनशैली है।**

मित्रो, 'हिन्दुत्व' एक ऐसी भू–सांस्कृतिक अवधारणा है, जिसमें सभी के लिए आदर है, स्थान है, और सह–अस्तित्व का भाव है। इस सह–अस्तित्व प्रधान सांस्कृतिक चेतना ने उसे अत्यंत उदार सहिष्णु और लचीला भी बनाया है। यही कारण है कि हिन्दुत्व सनातन है। हिन्दुत्व भारत का राष्ट्रीयतत्व है। यह भारत के राष्ट्र जीवन का सहज प्रवाह है। हिन्दुत्व किसी दल या संगठन के पार्लियामेट्री बोर्ड/कार्यसमिति के राजनैतिक मसौदे से नहीं आया, यह भारत की सहज प्रकृति है। इसी प्रकृति के कारण भारत का जन–गण–मन स्वाभाविक रूप से लोकतंत्रीय है।

जब हम जीते तो भी इन्हीं लोगों ने बात चला दी थी कि भाजपा की प्रगति और विस्तार के पीछे हिन्दुत्व है। सत्ता की राजनीति से 'हिन्दुत्व' जैसे विराट शब्द को जोड़ना स्वयं की ना समझी ही कही जाएगी। इसलिए हमें ऐसी बातों से कतई विचलित नहीं होना है। विचारधारा सतत प्रवाहित होने वाली अविरल धारा है। इसका प्रवाह कुछ क्षण के लिए मद्धिम पड़ सकता है, पर रूक नहीं सकता। अतः इस बारे में 'वे' सोचें जिनको भ्रम हो, हमें 'हिन्दुत्व' के बारे में कोई भ्रम पालने की आवश्यकता नहीं है।

चुनाव हारने के अनेकों कारण सामने आ रहे हैं। हम उन पर विचार कर रहे हैं। हम कतई रूढ़िवादी नहीं है। हम समाज की सलाह को ''अमृत प्रसाद'' मानते है। पर यदि कोई हमें जड़ से काटकर तने से जोड़ने की सलाह दे तो शायद यह उसकी भूल ही होगी कि वह अभी तक भाजपा के मूल को नहीं समझ पाया।

किसी भी राजनैतिक दल के चार आयाम होते हैं–विचारधारा, संगठन, नेतृत्व और रणनीति। मैं यह मानता हूं कि संगठन, नेतृत्व और रणनीति चुनावों में जय और पराजय में तात्कालिक रूप से अधिक भूमिका निभाते हैं। **विचारधारा एक स्थायी भाव है जो चुनावी जय–पराजय से ऊपर पार्टी का शाश्वत दिशा निर्देश करती है।**

जो स्थान राष्ट्र की राजनैतिक व्यवस्था में संविधान का है वही स्थान भाजपा की राजनैतिक व्यवस्था में हमारी हिन्दुत्व/भारतीयता/सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की विचारधारा का है।

पार्टी की नीतियां और कार्यक्रम दोनों मिल कर राजनैतिक शक्ति का निर्माण करते हैं। भले ही हमें चुनाव में आशातीत सफलता न मिली हो परन्तु हमारी नीतियां जो विशुद्ध राष्ट्रवाद की भावना से प्रेरित थी उन्हें मैं आज भी गलत मानने को तैयार नहीं हूं। हमारे द्वारा उठाये गये सभी विषय, चाहे वह राष्ट्र की आंतरिक और वाह्य सुरक्षा का विषय हो, विदेश नीति संबंधी विषय हो, आतंकवाद और तुष्टिकरण संबंधी विषय हो अथवा देश के सांस्कृतिक मान बिन्दुओं के अपमान का विषय हो या फिर अर्थव्यवस्था में आम आदमी और किसान की दुर्दशा के विषय रहे हों, ये सभी विषय राष्ट्र के लिए प्रासंगिक हैं और आज भी इन विषयों पर हम अपने पक्ष पर दृढ़ हैं।

हां मैं यह मानता हूं कि संभवतः हम अपने पक्ष को इन विषयों को जनता के मध्य उतने उपयुक्त और प्रभावी ढंग से प्रचारित और प्रसारित न कर पाये हों जितना कि आज की परिस्थितियों में आवश्यकता थी। शायद हमें अपने विचारों को और बेहतर एवं युगानुकूल संदर्भों में रखने की आवश्यकता है।

इसके लिए हमें अपने संगठन के ढांचे, व्यवस्था, प्रचार और रणनीति की समीक्षा की आवश्यकता है।

पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष के नाते मैं एक बात स्पष्ट करना चाहता हूं कि भाजपा की विचारधारा और पंरपरा के अनुसार **सफलता एक सामूहिक श्रेय है और असफलता एक सामूहिक उत्तरदायित्व।** अतः हमें इसका समाधान भी सामूहिक रूप से निकालना होगा। यदि कोई यह मानता है कि किसी एक व्यक्ति को यह उत्तरदायित्व लेना चाहिए तो पार्टी अध्यक्ष के नाते मैं यह उत्तरदायित्व लेने को तैयार हूं। आज जिस प्रकार का प्रचार और टिप्पणियां भाजपा की पराजय को लेकर हो रही है उससे हमारे कार्यकर्ता और समर्थकों के मन में भ्रम उत्पन्न हो सकता है कि हमें अपेक्षित समर्थन क्यों नहीं मिला। एक पक्ष यह है कि हमें अपेक्षित जनसमर्थन इसलिए नहीं मिला क्योंकि भाजपा अपने मूल स्वरूप और मूल विचार से पिछले कई वर्षों से लगातार अलग होती नजर आई, दूसरा पक्ष यह है कि हम अपेक्षित समर्थन इसलिए नहीं पा सकें क्योंकि हमें अब आज की राजनीतिक शब्दावली के अनुरूप दक्षिणपंथी की बजाय अधिक मध्यमार्गी दल के रूप में उभरना चाहिए था।

इस विषय पर वैसे तो अनेक विद्वान अपने विचार दे चुके हैं। पर इस विषय पर स्पष्टीकरण इसलिए आवश्यक है ताकि हमारे कार्यकर्ताओं, मतदाताओं और समर्थकों का मानस स्पष्ट रहे।

<u>भारत की राजनीति में हिन्दुत्व का प्रत्यक्ष व परोक्ष प्रभाव</u>

स्वतंत्र भारत की राजनीति में प्रखर राष्ट्रवादी विचार या जिसे हिन्दुत्ववादी विचार कहा जाता है। उसने हमेशा एक निर्णायक भूमिका निभाई। 1990 के दशक में भाजपा का उत्थान ही सिर्फ इसका प्रतीक नहीं था बल्कि 1971 में बांग्लादेश विजय के बाद इंदिरा गांधी की अपार लोकप्रियता भी सूक्ष्म रूप से इसी राष्ट्रवादी विचारधारा का प्रकटीकरण थी। उस समय देश के जनमानस द्वारा इसे इंदिरा जी के साथ जोड़ दिया गया और यदि हम गौर से देखें तो 1947 के बाद कांग्रेस ने एक पूरी पीढ़ी तक जो निर्बाध राजनैतिक सत्ता देखी उसका भी मूल कारण कहीं न कहीं देश के जनमानस के अवचेतन मन में विभाजन की प्रतिक्रिया स्वरूप उभरी राष्ट्रवादी विचारधारा थी जिसकी प्रतीक उस समय मुस्लिम लीग के विरूद्ध खड़ी कांग्रेस हो गई थी।

यदि हम देश के इतिहास पर भी दृष्टि डालें तो जिसे आज के राजनैतिक विश्लेषक दक्षिणपंथी राजनीति कहते हैं वह स्थान भारत की राजनीति ही नहीं, भारत के इतिहास में कभी रिक्त नहीं हुआ, हां उसके संदर्भ बदलते रहे।

आजादी की लड़ाई के समय अंग्रेजों की दृष्टि में कांग्रेस एक दक्षिणपंथी पार्टी थी। आजादी के बाद कांग्रेस मध्यमार्गी होती गई और भारतीय जनसंघ और आज की भाजपा ने क्रमशः राजनीति के उस स्थान को ग्रहण कर लिया और स्वतंत्र भारत की राजनीति के स्वरूप को बदलते हुए इसे द्विध्रुवीय कर दिया।

आजादी से पूर्व कांग्रेस के अंदर भी देखें तो 1907 में नरमदल और गरम दल के विभाजन के बाद ही देश में स्वतंत्रता आंदोलन का सूत्रपात हुआ। इतिहास के उस कालखंड में जब 1905 में तिलक ने पूर्ण स्वराज्य की मांग की थी तो उन्हें एक दक्षिणपंथी नेता माना गया जिसे अंग्रेजों ने भारतीय असंतोष का जनक माना। परन्तु यहीं से भारत के स्वतंत्रता संग्राम की नींव पड़ी जिसने अंततः हमें स्वतंत्रता दिलायी।

यहां तक कि यदि हम कांग्रेस की स्थापना के समय 1885 में तत्कालीन वायसराय लार्ड डफरिन के विचारों को पढ़ें तो कांग्रेस की स्थापना उस समय एक मध्यमार्गी नहीं बल्कि दक्षिणपंथी विचार माना गया। क्योंकि उस समय मध्यमार्गी विचार तो वायसराय से विनम्रतापूर्वक अधिक अधिकार की मांग करना ही था। अलग दल बनाना नहीं।

इससे पूर्व 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के समय जिसने कि वास्तविकता में भारत की स्वतंत्रता की नींव डाली उसके संयोजक नाना साहेब पेशवा से लेकर रानी लक्ष्मीबाई और मंगल पांडे तक जिन्हें आज देश की जनता अपना नायक मानती है वे भी उस समय की राजे–रजवाड़ों की राजनीति में एक दक्षिणपंथी राष्ट्रवादी विचार के प्रतीक थे।

इससे भी पहले जायें तो औरंगजेब की तानाशाही के विरूद्ध भी विन्ध्य के दक्षिण में छत्रपति शिवाजी और उत्तर में गुरू गोविन्द सिंह का उदय इसी बात का प्रतीक था कि उस समय विश्व की सबसे शक्तिशाली सत्ता (औरंगजेब की फौज उस समय दुनिया की सबसे ताकतवर फौज थी) भी भारत में प्रखर राष्ट्रवाद के उफान को रोक नहीं पायी।

इससे पहले जब अकबर ने कूटनीति का प्रयोग किया और अधिकांश राजपूत राजाओं ने मध्यमार्गी राजनीति का रास्ता चुना तब भी महाराणा प्रताप ने राष्ट्रवाद का झंडा उठाकर जिस राजनीति का श्रीगणेश किया जिसके कारण वे इतिहास में अमर हुए उसे यदि आज के विचारकों के चश्मे से देखें तो वह तथाकथित दक्षिणपंथी राष्ट्रवादी अथवा हिन्दुत्ववादी राजनीति का अंग थी।

कहने का तात्पर्य यह है कि जिसे हम राइट विंग कहते हैं उसका संदर्भ पिछले 40–50 सालों में नहीं बल्कि चार–पांच सौ सालों से बदलता रहा, और देश के स्वरूप में ऐतिहासिक बदलाव इसी के द्वारा हुआ। महाराणा प्रताप से लेकर, शिवाजी, गुरू गोविन्द सिंह, नाना साहब पेशवा, तिलक और वहां से निकली भारत की स्वतंत्रता का इतिहास इसका प्रमाण है। इतिहास के ये उदाहरण मैंने आपको इसलिए दिए कि अतीत की राजनीति को समझे बगैर भविष्य की राजनीति की आधारशिला नहीं तैयार की जा सकती। और अतीत यह बताता है कि आज की राजनीति का यह तथाकथित दक्षिणपंथी स्थान कभी भी रिक्त नहीं हुआ। हम इसके स्वाभाविक ध्वजावाहक है। और इसी में हमारे अतीत का गौरव, वर्तमान की रणनीति और भविष्य की उपलब्धि तीनों निहित है।

<u>आज का राजनैतिक यथार्थ</u>

ऐतिहासिक तथ्यों को छोड़कर यदि हम आज के ठोस राजनैतिक यथार्थ को भी देखें तो जिन राज्यों में हम एक राजनैतिक शक्ति हैं। जिन राज्यों में हमारी अपने दम पर सरकार है, भाजपा के मुख्यमंत्री हैं अथवा पूर्व में हमारे मुख्यमंत्री रह चुके हैं, ऐसे सभी राज्य जैसे, गुजरात, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, हिमाचल, उत्तराखंड, दिल्ली, झारखंड और कर्नाटक में हमारा सीधा मुकाबला यदि किसी एक पार्टी से है तो वह है कांग्रेस। उत्तर प्रदेश में भी हमारी पूर्व में सरकार रह चुकी है और इन चुनावों में यदि उत्तर प्रदेश में सर्वाधिक सफलता किसी दल ने पाई है तो वह कांग्रेस है। अर्थात् हमारी राजनैतिक शक्ति का आकलन कांग्रेस के विपरीत खड़े होने के द्वारा ही आंका जायेगा। **अतः आज का राजनैतिक यथार्थ यही कहता है कि हमें कांग्रेस से स्पष्टतः भिन्न एवं विपरीत ध्रुव के रूप में दिखाई पड़ना चाहिए। अन्यथा किसी भी प्रकार का भ्रम सिर्फ सैद्धांतिक ही नहीं राजनैतिक दृष्टि से भी हमारे लिए नुकसानदेय हो सकता है।**

यदि हम इस चुनाव परिणाम को भी एक उदाहरण के रूप में देखें तो भी हमें यही संकेत मिलता है कि भारत की राजनीति में अपने मूल चरित्र को छोड़ने वाले राजनैतिक दलों को नुकसान उठाना पड़ा।

भारत की राजनीति में विचारधारा की दृष्टि से मुख्यतः दो पार्टियां रहीं एक, दक्षिणपंथी विचारधारा की प्रतीक माने जाने वाली भारतीय जनसंघ/भाजपा दूसरी, वामपंथी विचारधारा की प्रतीक मानी जाने वाली कम्युनिस्ट पार्टी। इसके अतिरिक्त मध्यमार्गी विचार की प्रतीक माने जाने वाली कांग्रेस एक तीसरी धारा थी। इसके अतिरिक्त कुछ सीमा तक समाजवादी विचार की प्रतीक सोशलिस्ट और दलित विचार की प्रतीक बसपा।

इस चुनाव में सर्वाधिक क्षति वामपंथी दलों को हुई। वामपंथी दलों की सरकारें सिंगूर और नंदीग्राम जैसे प्रकरणों में अपने मूल चरित्र के विपरीत आचरण करती नजर आई। सत्ता के साथ समझौता ही नहीं बल्कि सुविधापूर्वक सत्ता भोगने का एक संदेश रहा जो वामपंथी विचारधारा के सर्वथा विपरीत था।

बसपा ने सामाजिक समरसता का ढोंग रचते हुए सर्वसमाज के नारे के साथ तथाकथित दलित–ब्राह्मण गठजोड़ के रूप में जो अपना चरित्र बदलने का प्रयास किया उसके परिणाम भी आज हमारे सामने हैं। एक बड़ी छलांग लगाने का उनका स्वपन्न ध्वस्त हो गया।

अतः अतीत हो या वर्तमान राजनैतिक हो या वैचारिक सभी दृष्टियों से विश्लेषण करके यही निष्कर्ष निकलता है कि अपने मूल चरित्र या विचारधारा को बदलना किसी भी दल के लिए घातक रहा है। अतः ऐसा कोई भी विचार हमारे लिए भविष्य में घातक सिद्ध होगा। हमें ऐसे किसी भ्रम से बचना चाहिए।

अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन ने एक बार यह कहा था कि If you have to choose between character and strategy in politics. Then, leave the strategy but be with the character. Because you can survive without strategy but can not survive without character.

अतः भगवान कृष्ण द्वारा गीता में कहा गया शाश्वत वाक्य ''स्वधर्मे निधनम श्रेयो:, परधर्मो भयावहः'' को हमें अपने मन में स्पष्ट रखना चाहिए।

जब हम पार्टी के मूल चरित्र की बात करते हैं तो हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि हम केवल एक सामान्य राजनैतिक दल नहीं है। जिसका कि लक्ष्य केवल सरकार बनाना हो। बल्कि हम एक ऐसी विचारधारा के प्रतिनिधि राजनीतिक दल हैं जिसका कि लक्ष्य एक नया युग और एक नयी सभ्यता की स्थापना करना है। **हमारी सोच सिविलाइजेशनल पैरामीटर की है। अतः एक या दो चुनाव की हार हमें विचलित नहीं कर सकती।** आदरणीय अटल जी और आडवाणी जी जैसे वरिष्ठ नेता हमारे सम्मुख इस चीज के प्रतीक के रूप में हैं। इन्होंने अपने जीवन के अधिकांश भाग में जब पार्टी के लिए समर्पित होकर राजनीति की तो शायद यह सोचा होगा कि संपूर्ण जीवन में भी हमें कभी सत्ता प्राप्त होगी अथवा नहीं।

यदि अटल जी आडवाणी जी, उससे पूर्व दीनदयाल जी और डा0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी और समर्पित कार्यकर्ताओं की महान परंपरा के प्रतीक स्व0 सुन्दर सिंह भंडारी, स्व0 कुशाभाऊ ठाकरे जैसे अनेकानेक लोगों को हम में से अधिकांश ने स्वयं देखा है। ये सब यह मानकर चलते थे कि जीवन में कभी सत्ता नहीं आनी है। जब उस समय हम विचलित नहीं हुए तो आज हम कैसे एक या दो चुनावों की हार से विचिलत हो सकते हैं। यदि हमें इतिहास बदलना है तो कलचक्र की गति के विरूद्ध खड़ा होने की एक अत्यंत सुदृढ़ इच्छाशक्ति अपने अन्दर रखनी होगी।

विदेश नीति

भारत के पड़ोसी देशों में इस समय अनेक प्रकार के महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहे हैं। **नेपाल** में अभी कुछ माह पूर्व ही माओवादी सरकार का पतन हुआ एवं श्री माधव नेपाल के नेतृत्व में वहां नई सरकार का गठन हुआ। मैं भारतीय जनता पार्टी की ओर से श्री माधव नेपाल एवं उनकी नई सरकार को बधाई देता हूं और आशा करता हूं कि आने वाले समय में भारत और नेपाल के संबंध अपनी शताब्दियों पुरानी परंपरा के अनुसार सहज एवं आत्मीय बने रहेंगे।

नेपाल में अभी भी राजनैतिक व्यवस्था में हिंसा एवं बल प्रयोग के प्रयास किये जा रहे हैं। भाजपा का ये मानना है कि नेपाल में व्यवस्था परिवर्तन प्रजातांत्रिक तरीके से होना चाहिये न कि बल प्रयोग के द्वारा। अभी भी माओवादी बल प्रयोग की नीति छोड़ने को पूरी तरह तैयार नहीं दिखते। नेपाल में संविधान सभा प्रजातांत्रिक तरीक से नये संविधान को लागू कर सके और लोकतंत्र की जड़े वहां मजबूत की जा सके ये सिर्फ नेपाल के लिए ही नहीं भारत के लिए भी आवश्यक है।

श्रीलंका में लिट्टे के पतन के बाद एक प्रकार से हिंसात्मक राजनीति का अंत हुआ है वहीं श्रीलंका पर यह उत्तरदायित्व आया है कि अब वह इस हिंसामुक्त वातावरण का लाभ उठाकर तमिलों की समस्या का एक स्थायी राजनैतिक समाधान प्रस्तुत करें। हम श्रीलंका की संम्प्रभुता का पूरा सम्मान करते हैं परंतु एक अखण्ड श्रीलंका में ही तमिल भावनाओं का उचित प्रतिनिधित्व भी आवश्यक है। **मेरा यह मानना है कि श्रीलंका की राजनैतिक व्यवस्था में तमिलों को उचित प्रतिनिधित्व देकर ही इस समस्या का स्थायी समाधान प्राप्त किया जा सकता है।**

परंतु, श्रीलंका में लिट्टे के सफाये के दौरान जिस प्रकार की हिंसात्मक कार्यवाही हुई और जिस प्रकार की सूचनायें प्राप्त हुई हैं उनसे ऐसा आभास होता है कि आम तमिल नागरिकों को भी भारी हिंसा का सामना करना पड़ा है। हजारों की संख्या में मौतें हुई हैं और तमिलों को अनेक प्रकार के कष्ट और भय के वातावरण में जीना पड़ रहा है। भारत सरकार इसके समाधान के लिये कोई भी कारगर उपाय नहीं कर सकी। हमारा मानना है कि श्रीलंका सरकार की तरफ से कुछ ऐसी पहल होनी चाहिये कि तमिल जनता के मन में भय समाप्त हो सके।

विश्वास का वातावरण बन सके। ताकि तमिल और सिंहली समुदाय के मध्य सौहार्द और विश्वास का वातावरण बन सके। भारत सरकार को इस हेतु पहल करनी चाहिये।

पाकिस्तान में आज जो कुछ भी हो रहा है उसमें कम से कम भारत और अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के उन बुद्धजीवियों का मिथक तोड़ दिया है जो यह कहते थे कि भारत पाकिस्तान के मध्य खराब संबंधों का मुख्य कारण जम्मू और काश्मीर है। आज पाकिस्तान के आंतरिक हालात जिस प्रकार के हैं। वो यह दर्शाते हैं कि भारत के साथ खराब संबंधों का आधार पाकिस्तान की लंबे समय से चल रही कट्टरपंथी आंतरिक राजनीति में निहित है। वे सभी देश जो आज पाकिस्तान की मदद करना चाहते हैं। उन्हें ये समझना चाहिये कि पाकिस्तान की मूल व्यवस्था बदले बगैर उसे सहयोग देना समझदारी नहीं है। **जब तक पाकिस्तान में सेना लोकतांत्रिक सरकार के आधीनता में काम करने की व्यवस्था नहीं स्वीकार कर लेती तब तक पाकिस्तान की आंतरिक समस्या का समाधान संभव नहीं है।**

पाकिस्तान में हालात लगातार बिगड़ रहे हैं। मैं पिछले दो वर्षों से यह कह रहा हूं कि पाकिस्तान के हालात पर केन्द्र सरकार को पैनी निगाह रखनी चाहिए। पाकिस्तान बिखराव की ओर बढ़ता दिख रहा है। तालिबान का प्रभाव वहां जिस सीमा तक बढ़ गया है, निश्चित रूप से उसका प्रभाव हमारी आन्तरिक सुरक्षा पर भी पड़ सकता है। यूपीए सरकार ने आंतरिक सुरक्षा के मुद्दे पर जैसा लचर रवैया अपने पिछले कार्यकाल में अपनाया यदि वह इसी दिशा में आगे बढ़ी तो भविष्य बहुत चिंताजनक हो सकता है।

भारत सरकार को यह स्पष्ट कर देना चाहिये कि पाकिस्तान के साथ कोई औपचारिक वार्ता तब तक नहीं की जा सकती जब कि पाकिस्तान तत्कालीन वाजपेयी सरकार को 6 जनवरी 2004 को दिये गये अपने उस वायदे के प्रति पुनः प्रतिबद्धता व्यक्त न कर दे जिसमें उसने भारत के विरूद्ध किसी गतिविधि के लिए अपनी जमीन का इस्तेमाल न होने देने का वचन दिया था। अटल जी के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार ने पाकिस्तान से यह वचन लिया था परंतु यूपीए उसका पालन नहीं करवा पाई। अब भारत पर मुम्बई में 26/11 जैसे आतंकवादी हमले और शांति वार्ता साथ–साथ नहीं चल सकती। **मैं अंतराष्ट्रीय समुदाय से यह भी आग्रह करना चाहूंगा कि पाकिस्तान की पश्चिमी सीमा पर जो कुछ हो रहा है उससे कुछ कम गम्भीर पूर्वी सीमा पर नहीं हो रहा है। यदि अफगानिस्तान सीमा पर पाक की गतिविधियां गम्भीर हैं तो भारत भी अपनी सीमा पर हो रही गतिविधियों में अब मूक दर्शक बना नहीं रह सकता। भारत सरकार को इस दिशा में प्रभावी कूटनीतिक कदम उठाने चाहिये।**

पिछले दिनों **आस्ट्रेलिया** में भारतीय छात्रों के साथ लगातार नस्लीय हिंसा की घटनाएं बढ़ीं। भाजपा इस पर चिंता व्यक्त करती है। इससे पूर्व भी मलेशिया में भारतीय मूल के लोगों का जिस प्रकार से दमन किया गया उसका केन्द्र की सरकार समुचित उत्तर नहीं दे सकी। आज आस्ट्रेलिया में भारतीय छात्रों पर हिंसा हो रही है। जब तक केन्द्र की सरकार अप्रवासी भारतीयों और भारतीय मूल के लोगों के हितों के लिए एक स्पष्ट एवं दृढ़ नीति नहीं अपनायेगी तब तक भविष्य में ऐसी समस्याएं आती रहेंगी। **हम केन्द्र से अपेक्षा करते हैं कि वह इस संदर्भ में एक सुदृढ़ नीति अपनायें ताकि सिर्फ आस्ट्रेलिया में ही नहीं बल्कि आने वाले समय में किसी भी अन्य देश में प्रवासी भारतीयों अथवा भारतवंशियों के साथ दुर्व्यवहार न हो सके।**

<u>हमारी कार्यपद्धति– समन्वय प्रगति का सर्वव्यापी सिद्धान्त</u>

हम एक नाजुक दौर से गुजर रहे हैं। हममें सारी संभावनाएं है। हमारी संभावनाओं से जनता इंकार भी नहीं कर रही। पर हमें उनके मन में विश्वास की लौ जलानी होगी। समाज में विश्वास की लौ वहीं जला सकता है, जिसमें स्वयं को जलाने की, मिटाने की क्षमता हो। **हमारी कार्यपद्धति का आधार है विश्वास और समन्वय। ये दो शब्द नहीं है, बल्कि भाव है। इसके बिना संगठन का कार्य चल नहीं सकता।**

हमें अपना विस्तार संगठनात्मक, वैचारिक, सामाजिक और राजनैतिक स्तर पर करना होगा। कहीं न कहीं हमारे विस्तार का व्याप कम हुआ है या फिर हम उन तक पहुंच नहीं पाए। हमें विस्तार व उन्नति के नए क्षितिज में प्रवेश करने की तैयारी में जुटना होगा। हमें सामूहिक रूप से प्रयास प्रारम्भ करना होगा। वस्तुतः समन्वय ही सर्वव्यापी दार्शनिक परिपेक्ष्य है जो जीवन एवं राजनीति में हमारे सभी प्रश्नों का सही उत्तर ढूंढने में सहायक सिद्ध होगा। आज देश और हमारे संगठन के सामने जो ठोस चुनौतियां है, उनका सामना करने के लिए हमें भाजपा की विचारधारा के मूलमंत्र का प्रयोग करते रहना पड़ेगा। ऐसा करते समय **हमें अपने मन से ऐसी गलत धारण को निकाल देना चाहिए कि समन्वय केवल एक समझौते का नुस्खा है, और इसलिए यह दुर्बल लोगों का मार्ग हैं।**

नहीं, यह शक्तिशाली लोगों का मार्ग है। वस्तुतः यह नेतृत्व का एक प्रमुख अंग है, हमे इस दिशा में बढ़ना होगा। ''मैं नहीं तू'' की परम्परा को जाग्रत करना होगा।

<u>युवा नेतृत्व विकसित करना</u>

मुझे यह कहने में कतई संकोच नहीं कि भारतीय जनता पार्टी देश और प्रदेश की राजनीति में युवाओं को सर्वाधिक महत्व देती रही है। हमनें अनेक युवा सांसद विधायक और युवा मुख्यमंत्री दिए हैं। बावजूद इसके हमें अपने–अपने जिलों में युवा नेतृत्व जिला, प्रान्त एवं राष्ट्रीय स्तर पर अवश्य विकसित करने चाहिए। हमारा मानना है कि युवा नेतृत्व को तलाशना और तराशने का कार्य तेजी से करना चाहिए।

दल के राष्ट्रीय एवं प्रान्तीय स्तर पर लोक संग्रह के ऐसे वृहद् कार्यक्रम रखने चाहिए जिससे युवा जुड़ें और फिर मोर्चा को चाहिए कि वह उन युवाओं को विचारधारा से जोड़े। इसमें कोई दो मत नहीं कि परिवर्तन की ऊर्जा युवाओं में होती है।

<u>अनुसूचित जाति–अनुसूचित जनजाति</u>

भारतीय जनता पार्टी के साथ वर्षों से अनुसूचित जाति और जनजाति का अन्य दलों से अधिक जुड़ाव रहा है। हम सदैव गर्व से कहते हैं कि भाजपा के पास सर्वाधिक अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति सांसद है। परन्तु इस बार स्थितियां अपेक्षा के अनुरूप नहीं है।

हम सभी जानते है कि हमारे संगठन में अजा और अजजा दोनों मोर्चे सदैव सक्रिय रहे हैं। हमें इस दिशा में अत्यधिक और योजनाबद्ध तरीके से विस्तार की योजना बनानी होगी। साथ ही इन दोनों मोर्चों के माध्यम से हमें सामाजिक स्तर पर भी अभियान चलाना होगा। जिन राज्यों में हमारी सरकारें हैं या हम जहां विपक्ष की भूमिका में है, वहां हमें इन वर्गों के बीच कारगर कदम उठाने होंगे और जो सीटें हम हारे हैं, उन सीटों के अतिरिक्त अन्य सीटें भी चिन्हित कर कार्य का विस्तार करना चाहिए।

<u>सभी स्तरों पर पार्टी की निचली इकाईयों को सक्रिय करना</u>

संगठन का गठन अधिकांश बूथ इकाइयों तक हो जाने के बाद भी उन्हें सदैव सक्रिय रखने की योजना और कार्यक्रम हमें बनाने होंगे। इन इकाईयों की चिंता और उनके कार्यों की निगरानी भी हमें अपने–अपने स्तर पर करते रहने की आवश्यकता लगती है। हमें ध्यान में रखना होगा कि जनता के बीच गांव–गांव या शहरों में, मोहल्लों में हमारी अंतिम इकाई का कार्यकर्ता ही जाता है। उसकी वैचारिक प्रतिबद्धता, सक्रियता, उसका व्यक्तिगत सम्पर्क ही हमारे दल की शक्ति को बढ़ाता है।

मुझे लगता है कि प्रान्त–प्रान्त में जिलाध्यक्ष और मंडल अध्यक्षों का नीचे की इकाई तक प्रवास होना अनिवार्य सा होना चाहिए। न केवल चुनाव परिणाम बल्कि संगठन के विस्तार और अंतिम इकाई की सक्रियता के लिए यह अनिवार्य सा है कि इन इकाईयों से सतत् जीवंत सम्पर्क रहना चाहिए। इन्हें दलीय कार्यों के साथ–साथ सामाजिक और अन्य रचनात्मक कार्यों से भी जोड़ने की चिंता करनी चाहिए। अगर ऐसा कर सकने में हम सफल हो गए तो मुझे लगता है कि आने वाले पांच वर्षों में हमारे संगठन की मजबूती और पकड़ बढ़ेगी।

<u>जन प्रतिनिधि</u>

मुझे जहां तक जानकारी मिली है कि हमारे जितने सांसद चौदहवीं लोकसभा में थे, उनमें से मात्र 37 सांसद ही पुनः चुनाव जीतकर आए हैं। यह संख्या हमारे लिए चिंता का विषय है। मुझे ध्यान है कि चौदहवीं लोकसभा निर्वाचन में भी हमारे 13वीं लोकसभा में रहे सांसदों में से पुनः जीतकर आने वालों सांसदों की संख्या कम रही थी।

मा0 आडवाणी जी ने सन् 2004 के लोकसभा निर्वाचन के पश्चात पहली राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में इस बात पर चिंता व्यक्त की थी कि हमारे सांसदों, विधायकों द्वारा अपने संसदीय और विधानसभा क्षेत्रों की देखरेख चिंता से नहीं होती है। उन्होंने इस बात पर गहरी चिंता व्यक्त की थी कि हमारा वैचारिक मतदाताओं का भी क्षेत्र होता है, कहीं उन क्षेत्रों में तो कमी नहीं आ रही? मुझे लगता है कि निर्वाचित प्रतिनिधियों द्वारा अपने–अपने क्षेत्रों की देखभाल हर स्तर पर होनी चाहिए। खासकर निर्वाचित प्रतिनिधि संगठन और कोर कार्यकर्ताओं के बची अंतरंगता होनी चाहिए। मेरा मानना है कि जनप्रतिनिधियों के माध्यम् से समाज में दल की

छवि बनती है। जब मैं दल की छवि की बात कर रहा हूं तो यहां स्पष्ट कर दूं कि निर्वाचित जन–प्रतिनिधि पर पार्टी की छवि, समाज को बनाने का बहुत बड़ा दायित्व रहता है। एक जन–प्रतिनिधि यदि जनता के बीच जनता की तरह, जनता को साथ लेकर उनकी छोटी–छोटी समस्याओं को लेकर जूझते हैं या उसके निराकरण के लिए सतत् सकारात्मक रूप से सक्रिय रहते हैं तो न केवल उस प्रतिनिधि की बल्कि जिस दल से वह चुनकर आता है उसकी साख और प्रतिष्ठा समाज में बढ़ती है।

मुझे लगता है कि जन–प्रतिनिधियों को अपना दोहरा दायित्व समझना चाहिए। दल को भी और जनप्रतिनिधियों को स्वयं भी इस दिशा में कारगर पहल करनी होगी। समाज जन उपेक्षा बर्दाश्त नहीं करता। फिर हम जिस युग में राजनैतिक कार्य कर रहे है, वह तो पूरी तौर पर छवि पर आधारित ही है। अतः हमें जन–प्रतिनिधि के नाते अपनी छवि का आंकलन भी भिन्न–भिन्न स्रोतों से कराते रहना चाहिए। **पार्टी स्तर पर भी कोई न कोई ऐसी व्यवस्था करनी होगी कि हमारे जन–प्रतिनिधि की छवि में गिरावट आने के बजाए वह और अधिक निखर कर कैसे आए। इस दिशा में पार्टी को कोई ठोस और कारगर योजना बनानी होगी।** हम सभी लोग जानते है कि आजकल आम जनता अपने निर्वाचित प्रतिनिधियों की उपलब्धता सहज रूप से चाहता है। आम जनता की जन–प्रतिनिधियों से सहयोग की अपेक्षा भी बढ़ जाती है, जो स्वाभाविक है। मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं कि एक निर्वाचित प्रतिनिधि अपने व्यक्तिगत व्यवहार से पार्टी की छवि निखार सकता है और समाज के विभिन्न वर्गों में दल के कार्य का विस्तार कर सकता है, साथ ही उसकी तत्परता से हम जो अगल–बगल की सीटें नहीं जीत पाए है, वह भी हम आगे जीत सकते हैं।

<u>राज्य सरकारों से अपेक्षा</u>

भारतीय जनता पार्टी को अपनी राज्य सरकारों से बहुत उम्मीद है, जनता की आशाओं पर गुजरात, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ की सरकारें शत–प्रतिशत खरा उतरी है, तभी इन प्रदेशों की जनता ने पुनः भाजपा को सत्ता प्रदान की। इन राज्यों में पुनः सरकार बनने का जो बहुत बड़ा कारण है कि इन सरकारों ने जनता के बीच यह छवि बनाने में सफलता प्राप्त की कि ये उनकी सरकार है। आम जनता को इन राज्यों में एहसास हुआ कि यह सरकार हमारे लिये है। मुझे यह कहने में गर्व होता है कि हमारे इन तीनों राज्यों के मुख्यमंत्रियों की लोकप्रियता का भी सरकार पुनः लाने में बड़ी भूमिका रही है।

किसी सरकार के बारे में जनता के बीच यह भाव पैदा हो जाना कि यह सरकार वही कर रही है, जो हम सोच रहे हैं, सामान्य बात नहीं है। कर्नाटक और हिमाचल प्रदेश में भाजपा सरकार आम जनता की सरकार के रूप में लोकप्रियता हासिल कर रही है। बिहार में हमारी गठबंधन की सरकार है, बावजूद इसके 'बिहार' में लोग यह मानते ही नहीं बल्कि कहने लगे है कि 'विकास' करने वाली सरकार वर्षों बाद बनी है।

हमारी इन सरकार पर बहुत बड़ा दायित्व है। चाहे गठबंधन की पंजाब में चल रही सरकार हो या फिर उत्तराखंड में चल रही भाजपा सरकार हो। हमारी सरकारें जहां–जहां है, या हम जहां–जहां सरकार में है, वहां हमें इतिहास रचना है। इतिहास रचने का आशय यह कि आम नागरिकों के मन में हमारी सरकार के प्रति श्रद्धा और स्नेह का भाव सदैव कैसे बना रहे, इसकी हमें चिंता करनी होगी। समाज के सभी तबकों, वर्गों को यह लगना चाहिए कि हमने अपने मत से जिस सरकार को चुना था, वह हमारी है, और उसकी हिफाजत करना और चलाने में पूरी तरह सहयोग करना हमारा भी दायित्व है। हमारी राज्य सरकारों को आम जनता के बीच घुल–मिल जाना चाहिए।

<u>अनुशासन</u>

मैं पार्टी अनुशासन के विषय में कुछ शब्द कहना चाहता हूं। हमें अवश्य स्मरण रखना चाहिए कि उन व्यक्तियों ने ही इस पार्टी का निर्माण किया है, जिन्होंने संगठन को हर चीज से ऊपर रखा। हम आज जो कुछ भी है, वह केवल इसलिए है, क्योंकि संगठन के हितों को सदैव व्यक्ति के हितों और आकांक्षाओं से ऊपर रखा गया।

भाजपा एक विशिष्ट प्रकार की पार्टी के लिए प्रसिद्ध रही है। यह वह पार्टी है, जो अनुशासन और पार्टी के सिद्धांतों और कार्यक्रमों के प्रति परम्निष्ठा को अत्यधिक महत्व देती है।

पार्टी की सभी राज्य इकाईयों को भी यह सुनिश्चित करना होगा कि अनुशासनहीनता से कोई समझौता नहीं किया जाए। अनुशासन की व्यवस्था और उसके सिद्धांतों का पूरी निष्ठा के साथ पालन हो ताकि प्रांतों में पार्टी संगठन बेहतर तालमेल और एकजुटता के साथ आने वाले वर्षों में आगे बढ़ सके।

<u>महत्वपूर्ण संगठनात्मक पहल के लिए कुछ सुझाव</u>

- निणर्य लेने की प्रक्रिया और कार्यक्रमों तथा नीतियों के कार्यान्वयन दोनों में ही कार्यकर्ताओं को सहभागी बनाया जाए।
- सभी स्तरों पर इकाईयों तथा मोर्चों के बीच केन्द्र और राज्य दोनो में पार्टी तथा इसके विधायी अंगों के बीच अधिक तालमेल सुनिश्चित किया जाए।
- मतभेदों और शिकायतों का शीघ्रता से समाधान किया जाए। अनुशासनात्मक कार्रवाई लटकाई न रखी जाए बल्कि तुरन्त की जाए।
- आधारभूत स्तर से पार्टी इकाईयों को सक्रिय और कारगर बनाया जाए। केवल मंडल स्तर इकाईयों तक ही हम सीमित न रहें। हमें सुनिश्चित करना होगा कि कि ये इकाईयां हर समय सक्रिय और कार्य करती रहे।
- सभी स्तरों पर हमारे नए प्रवेश करने वाले तथा वर्तमान दोनों कार्यकर्ताओं के लिए नियमित प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए जाए।
- कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण के लिए एक निश्चित पाठ्यक्रम भी तैयार करना चाहिए और इस पाठ्यक्रम को वर्गों के माध्यम से पूरा करना चाहिए।

अंत में, मैं कहना चाहूंगा कि भविष्य को लेकर हमें किसी भी प्रकार से मन में संशकित या भयभीत नहीं होना चाहिए। इस संदर्भ में विश्व के इतिहास के एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम का स्मरण आपको कराना चाहूंगा। जब अमरीका 1930 के दशक में गंभीर आर्थिक मंदी के दौर से गुजर रहा था। अमेरिकी जनता का आत्मविश्वास डगमगा रहा था तब 4 मार्च, 1933 को फ्रेंकलिन डी. रूजवेल्ट जिनकी दोनों टांगे पोलियो से ग्रसित थीं, जिनके लिए अपने आप खड़े हो पाना भी संभव नहीं था पर उसने पूरे अमरीका को विश्वास दिलाते हुए अपने ऐतिहासिक भाषण में कहा था कि "The biggest fear of ours is the fear itself" अर्थात् हमारा वास्तविक भय सिर्फ भय के अस्तित्व पर खड़ा है। इस विचार को लेकर रूजवेल्ट आगे बढ़े, अमरीका को मंदी से बाहर निकाला, विश्व युद्ध में एक प्रभावी भूमिका में स्थापित किया। वे चार बार अमरीका के राष्ट्रपति बने और उसी समय में अमरीका विश्व की महाशक्ति बन कर स्थापित हुआ। अतः हमें भी अटल जी की दो कविताओं के वह वाक्य ध्यान रखने चाहिए–

''हार में या जीत में, किंचित नहीं भयभीत मैं।''

और दूसरी प्रसिद्ध कविता–

''कदम मिलाकर चलना होगा।''

अटल जी की इन दो पंक्तियों में हमारे वर्तमान और भविष्य दोनों का सार निहित है।